अनूपपुर वनमंडल के ग्राम सकरा में एक दिवसीय लाख प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन, दिनांक 23 जून, 2025

किसानों और वन समिति के सदस्यों को लाख उत्पादन की उन्नत तकनीकों से अवगत कराने के लिए अनूपपुर वन मंडल के अंतर्गत ग्राम सकरा में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और अनूपपुर वन मंडल के संयुक्त तत्वावधान में 23 जून, 2025 को आयोजित हुई। इसमें कुल 65 किसानों और वन समिति के सदस्यों ने भाग लिया।

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को बताया गया कि लाख एक प्राकृतिक राल है, जो कैरिया लैक्का नामक लाख कीट की प्रजातियों द्वारा स्रावित होता है। भारत में मुख्य रूप से रंगीनी और कुसुमी लाख कीटों से इसका उत्पादन किया जाता है। रंगीनी लाख का उत्पादन पलाश और बेर के वृक्षों पर किया जाता है, जबकि कुसुमी लाख का उत्पादन कुसुम, बेर और सेमियालाता के पौधों पर किया जाता है।

प्रशिक्षण में किसानों को लाख उत्पादन की उन्नत तकनीक, कीट का जीवन चक्र, फसल चक्र, पोषक वृक्षों की जानकारी, कीट संचारण और फसल प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गई। बताया गया कि इस क्षेत्र के लिए पलाश, बेर और सेमिलता के वृक्ष उपयुक्त हैं। एक औसत पलाश के वृक्ष से 5–6 हजार रुपये, बेर के वृक्ष से 6–7 हजार रुपये और प्रति एकड़ सेमिलता का प्लांटेशन करके 5–6 लाख रुपये तक की आय प्राप्त की जा सकती है।

संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि भारत में लाख उत्पादक क्षेत्रों के अधिकांश जनजातीय परिवार कृषि के सहायक व्यवसाय के रूप में लाख की खेती करते हैं। लाख का उपयोग फार्मास्यूटिकल, परफ्यूम, कॉस्मेटिक, पेंट, वार्निश और इलेक्ट्रॉनिक पॉलिश जैसे विभिन्न उद्योगों में होता है। वैश्विक स्तर पर इसकी भारी मांग है और भारत लाख का निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी अर्जित करता है। वर्ष 2019–20 में भारत का वार्षिक लाख उत्पादन लगभग 18,944 टन रहा था। भारत में लाख की खेती मुख्य रूप से झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, ओडिशा, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश के वनवासियों और आदिवासी समुदायों द्वारा की जाती है।
प्रदेश में लाख पोषक वृक्षों पलाश, कुसुम एवं बेर की बहुलता होने के कारण लाख उत्पादन की अपर सम्भावनाये है परन्तु तकनीकी ज्ञान और जागरूकता के आभाव के कारन लाख का उत्पादन कम होता जा रहा है। उक्त प्रशिक्षण कार्यशाला में व्याख्यान सत्र के पश्चात प्रशिक्षार्थियों को फील्ड पर ले जाकर लाख उत्पादन की हैंड होल्डिंग ट्रेनिंग कराई गई ।

यह कार्यशाला भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान, रांची से वित्त पोषित लाख परियोजना के तहत आयोजित की गई। इस परियोजना के अंतर्गत संस्थान को मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गोवा और दमन–दीव राज्यों में लाख अनुसंधान के लिए नोडल सेंटर बनाया गया है। इस परियोजना के तहत अब तक प्रदेश के 16 जिलों में 33 प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की जा चुकी हैं, जिनसे 1,250 से अधिक किसानों और वन समिति के सदस्यों को लाख उत्पादन की उन्नत तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया है।

कार्यशाला का संपादन संस्थान के संचालक श्री प्रदीप वासुदेवा और वनमंडलाधिकारी, अनूपपुर के मार्गदर्शन में डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार (परियोजना अन्वेषक) द्वारा किया गया। इसमें बलराम लोधी, जशनदीप सिंह ठाकुर, सरपंच श्री संतोष कुमार सिंह और वनरक्षक श्री नर्मदा पटेल आदि उपस्थित थे।

ग्राम पंचायत सकरा
जनपद पंचायत जैतहरी, जिला-अनूपपुर (म.प्र.)
NETWORK PROJECT ON CONSERVATION OF LAC INSECT GENETIC RESOURCES